रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मैथिली गीतकेँ जन-गण धरि लऽ जायवला कविमे रवीन्द्रनाथ ठाकुर मुख्य छथि। पूर्णिया जिलाक धमदाहा गाममे 7 अप्रैल, 1936 कऽ हिनक जन्म भेलनि। प्रारम्भमे ई सरकारी नोकरी कयलनि, मुदा से छोड़ि पूर्णतः लेखन-कार्यमे लागि गेलाह। मैथिली अकादमी, पटनाक निदेशक रूपमे महत्वपूर्ण काज कयने छथि।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्वभावसँ साहित्य-संगीत-कला संसारक लोक छथि। गीतक माध्यमसँ मैथिली भाषा - साहित्यक प्रचार-प्रसार कयलनि। बाल-बच्चा, युवक-युवती आ बूढ़-जवान-सभकेँ हिनक गीत नीक लगलैक। सुनि-पढ़ि कऽ लोक झूमि उठल। एहि प्रकारक गीत-संग्रहमे सुनू सुनू बहिना, जहिना छी तहिना, स्वतंत्रता अमर हो हमर, प्रगीत, सुगीत, रवीन्द्र पदावली आदि लोकप्रिय अछि। मैथिलीमे फिल्म बनयबाक श्रेय हिनका छनि। 'ममता गाबय गीत' आइयो ऐतिहासिक उपलब्धि मानल जाइत अछि। सम्प्रति दिल्लीमे रहि सुयोजन फिल्म्स इन्डिया प्राइवेट लिमिटेडक माध्यमसँ साहित्य आ कलाकेँ नव-नव आयाम दऽ रहल छथि।

काव्य सन्दर्भ -प्रस्तुत कविता 'स्वतंत्रता अमर हो हमर' नामक पोथीसँ लेल गेल अछि। पोथीक नामे सँ स्पष्ट अछि जे एहिमे राष्ट्रप्रेमक रचना संगृहीत अछि। 'जय-जवान : जय किसान' सेहो राष्ट्रीय प्रेमक कविता थिक। भारत पर चीनी आक्रमण 1962 मे भेल छल। तकरा बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री इएह नारा देने रहथि। भारतक सेना आ किसानकेँ जगयबाक लेल ई कविता लिखल गेल अछि। यदि भारत सुरक्षित आ आत्म-निर्भर रहत तऽ एकरा पर कोनो आक्रमण निष्फल भऽ जायत। तेँ सैनिककेँ आ कृषककेँ अपन-अपन काजमे मनसँ लागब अपेक्षित अछि।

जय जवान : जय किसान

जय बाजू मिलिकय भैया
जय बाजू वीर जवान केर
जय जय हो भारत मैया
जय जय हो आइ किसान केर।

लड़त सिपाही जा सीमा पर
हऽम अन्न उपजेबै
आमद सँ कम खर्चा करबै
बेसी अन्न बचेबै
असराने रखबै आन केर।

हऽम कमयबै तखने खयतै
बोआ हमर सिपाही
मेहनति करबै देह तोड़िकै
हऽ रे बड़द गबाही
ममता ने राखब जान केर।

बून्दे-बून्दे घैल भरै छै
पैसे-पैसे भरे बटुआ
जै घर पैसा सुख छै तै घर
नाचय छम-छम नटुआ
शोभा अपरूप हिन्दुस्तान केर।

शब्दार्थ

आमद - आमदनी

असरा - भरोसा

अपरूप - सुन्दर

बटुआ - कपड़ाक बनाओल छोट झोड़ी

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'जय जवान जय किसान' कविताक रचनाकार के छथि ?

(क) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (ख) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(ग) उदय चन्द्र झा 'विनोद' (घ) तारानन्द 'वियोगी'

(ii) सिपाही कतय लड़ैत अछि

(क) खेतमे (ख) घरमे

(ग) सीमा पर (घ) लड़ाइक मैदानमे

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :-

(i) ममता ने राखब .... केर

(ii) नाचय छम-छम नटुआ शोभा अपरूप .... केर

3. निम्नलिखितमे सँ शुद्ध / अशुद्ध प्रश्नकेँ चिह्नित करू :-

(i) किसान सीमा पर लड़ैत अछि।

(ii) सिपाही अपन जान केर मोह नहि रखैत अछि।

4. सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) लड़त सिपाही जा सीमा पर

हऽम अन्न उपजेबै

आमदसँ कम खर्चा करबै

बेसी अन्न बचेबै

असराने रखबै आन केर ।

(ii) बून्दे-बून्दे घैल भरै छै
पैसे-पैसे भरे बटुआ
जै घर पैसा सुख छै तै घर
नाचय छम-छम नटुआ
शोभा अपरूप हिन्दुस्तान केर।

5. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) जवान की करैत छथि ?

(ii) किसानक की काज अछि?

(iii) कवि ककर जयकार करैत छथि ?

(iv) कोन व्यक्ति प्रसन्न रहैत छथि ?

6. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) देशक विकासमे जवान ओ किसानक योगदानक उल्लेख करू।

(ii) 'जय जवान जय किसान' कविताक भाव स्पष्ट करू।

गतिविधि-

1. अमर शहीद सेनानी पर लिखित गीत छात्र गावथि।
2. एक किसानक आत्मकथा लिखू
3. जवान आ किसान देशक लेल कतेक महत्त्वपूर्ण अछि–छात्र आपसमे चर्चा करथि।
4. जवान आ किसानक जीवन पर स्वतन्त्र-स्वतन्त्र निबन्ध लिखू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ जवान आ किसानक दशासँ अवगत कराबथि।
2. किसान पर लिखित आन गीतसँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।
3. 'जय-जवान: जय किसान' कविताक सस्वर पाठ कराबथि।
4. 'जय जवान: जय किसान' किनकर नारा थिक, शिक्षक छात्रकेँ अवगत कराबथि।
5. 'जय जवान: जय किसान नारा' कहिआ देल गेल आ किएक देल गेल-शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।

विद्यानाथ झा 'विदित'

विद्यानाथ झा 'विदित' मैथिलीक जानल-मानल रचनाकार छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक मौहार गाममे 5 जून, 1942 कऽ भेलनि। मैथिलीमे एम.ए, पीएच.डी. कयलनि, संताल परगना कालेज, दुमकामे मैथिलीक प्राध्यापक ओ विभागाध्यक्ष भेलाह। ओही कालेजक प्राचार्य-पद पर कार्य करैत सेवा-नेवृत भेलाह।

विद्यानाथ झा 'विदित' गत शताब्दीक सातम दशकमे साहित्य-रचना प्रारम्भ कयलनि। तकरा बाद हिनक लेखनी कहियो विराम नहि लेलक। लगातार लिखि रहल छथि। वास्तविकता ई अछि जे आयुमे वृद्धिक संग-संग हिनक लेखनक गति सेहो बढ़ल अछि। ई कविता, कथा, उपन्यास, निबन्ध, समीक्षा-सभ विधामे लिखैत छथि। लगभग बीसटा हिनक प्रकाशित पोथी छनि। 'मैथिली ओ संताली' हिनक महत्वपूर्ण अवदान अछि। एकर अतिरिक्त मानव कल्प, महोदय मन्वन्तर, बहुरिया, प्रालब्ध, विप्लव बेसरा, कोसिल्या, कर्पूरिया, ओ 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक उपन्यास, फूटल चूड़ी-कथा संग्रह प्रकाशित सिंगरहार, सुरासुन्दरी, (काव्य) आदि पोथी प्रकाशित अछि। सम्प्रति उपन्यास -लेखन पर हिनक बेसी जोर छनि। संगहि मैथिली भाषा आ साहित्यक विकास लेल सेहो दत्तचित्त छथि। साहित्य अकादेमी, दिल्लीमे मैथिलीक प्रतिनिधि छथि।

काव्य सन्दर्भ – प्रस्तुत कविता मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित कविता संग्रहसँ लेल गेल अछि। कविता देशक, मातृभूमिक, वन्दना थिक। एहि क्रममे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासकेँ प्रेरणाक रूपमे राखल गेल अछि। मिथिलाक अतीत प्रेरणादायक अछि। वेदक मंत्र, स्मृति-पुराण, सीता-सन बेटी, भारती-सन कुलवधू, विद्यापति सदृश कवि, रामायण-सन ग्रन्थक रचनाकार कवि चन्द्र -सब प्रेरक बनि कऽ मार्गदर्शन लेल उपलब्ध छथि। ई सभ त्याग, बलिदान आ कर्मठताक संदेश दैत छथि। ई कविता जन्मभूमिक गुण-गौरवक स्मरण द्वारा आजुक लोककेँ प्रेरित करबाक प्रयास थिक।

वन्दना

हित-हित वलिदान होयबा सँ समुज्ज्वल कर्म की ?
मातृभूमिक वन्दना सँ श्रेष्ठ पावन धर्म की ?
जाहि धरती पर जनक केर
दीप्त ज्ञान - विवेक ।
याज्ञवल्क्यक अमित - तेजक
भेल हो अभिषेक ।।
जाहि ठामक माटि श्रुतिमय
पानि स्मृतिमय रहल हो।
वायु केर सिहकी ऋचामय
घर-आँगनमे बहल हो ।।
ताहि भूमिक अर्चनासँ श्रेष्ठ दोसर धर्म की ?
अछि अयाचिक दूभि आसन सँ विमल मृगचर्म की ?
खेत मे उपजलि जतय श्री
स्वयं, धी बनि, जानकी।
जाहि ठामक कुल बधू बनि
पूजिता छथि भारती।।
जाहि भूमिक कविक अपरूप
कंठमे कोकिल बसल हो।
जाहि भूमिक शैव कवि सँ
गेल रामायण रचल हो।।

ताहि भूमिक चित्रसँ बढ़ि आर दोसर यंत्र की ?
साधनामय भूमिसँ बढ़ि साधना केर मंत्र की ?
जाहि भूमिक भैरबी केर कर सुशोभित खड्ग हो।
शिव जकर चाकर स्वयं ओ भूमि सरिपहुँ स्वर्ग हो।।
मोक्षमय स्मृति अतीतक बाल बोधक ठोरपर हो।
ताहि भूमिक चरण भावी कियैन प्रगतिक छोरपर हो ।।
मातृभूमिक माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ आर दुलार की ?
जन्मभूमि निमित्त शीशक दान सँ लघु आर की ?

शब्दार्थ :

समुज्वल - चकमक
पावन - पवित्र
दीप्त - चमकै/ प्रभायुद्र
अमित - असीम
अभिषेक - मंत्र पढ़ल जल छीटब
श्रुति - वेद
स्मृति - विधि-विधानक पोथी, जेना-मनुस्मृति
सिहकी - वायुक वेग
ऋचामय - ऋग्वेदक मन्त्रसँ युक्त
अर्चना - पूजा
विमल - स्वच्छ , निर्दोष
मृगचर्म - हरिणक-छाल
भैरवी - भयानक रूपवाली देवी
खड्ग - तरूआरि
थी - बेटी

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -**

(i) 'वन्दना' कविताक रचयिता छथि -

(क) विद्यानाथ झा 'विदित' (ख) बुद्धिनाथ मिश्र

(ग) विद्यापति (घ) उदय चन्द्र झा 'विनोद'

(ii) विद्यानाथ झा 'विदित'क रचना छनि

(क) समय साल (ख) वन्दना

(ग) बच्चा (घ) हाथ

2. **रिक्त स्थानक पूर्ति करू :-**

(i) ताहि भूमिक अर्चनासँ श्रेष्ठ .... धर्म की ?

(ii) मातृभूमिक वन्दनासँ श्रेष्ठ पावन .... की ?

(iii) मातृभूमिक माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ .... दुलार की ?

3. **लघूत्तरीय प्रश्न-**

(i) वन्दना किनकर कविता अछि ?

(i) पठित पाठमे वन्दनीय के आ की सभ अछि ?

(iii) पठित पाठमे कविक कहबाक की उद्देश्य अछि ?

(iv) मातृभूमिक वन्दना श्रेष्ठ धर्म थिक किएक ?

(v) पठित पाठमे वर्णित देवताक नाम लिखू।

4. **दीर्घोत्तरीय प्रश्न-**

(i) 'वन्दना' शीर्षक कविताक वर्णन करू।

(ii) पठित पाठक सारांश लिखू।

(iii) जनक-याज्ञवल्क्यक चर्चा कोन रूपेँ कयल गेल अछि।

(iv) प्रस्तुत कवितामे वर्णित महान व्यक्ति सभक थोड़मे परिचय दिअ।

5. सप्रसंग व्याख्या करू -

(i) जाहि धरती पर जनक केर
दीप्त ज्ञान-विवेक
याज्ञवल्क्यक अमित तेजक
भेल हो अभिषेक ।।

(ii) मातृभूमि माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ आर दुलार की ?
जन्मभूमि निमित्त शीशक दान सँ लघु आर की ?

गतिविधि-

1. मातृभूमिक वन्दना आनो कवि कयलनि अछि - स्मरण करू आ लिखू ।
2. एहि कविताकेँ सस्वर पाठ करू ।
3. एहि कवितासँ की शिक्षा भेटैत अछि ?
4. पाँच संज्ञा शब्द चुनि वाक्यमे प्रयोग करू।

निर्देश-

1. शिक्षक जनक, याज्ञवल्क्यक, अयाची, जानकी, भारती आदिक सम्बन्धमे छात्रकेँ परिचय कराबथि।
2. मातृभूमिक वन्दना श्रेष्ठ वन्दना थिक, शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।
3. शिक्षक मातृभूमिक महत्ताक निर्देश करबैत छात्रकेँ बुझयबाक प्रयास करथि जे मातृभूमिक लेल जँ गर्दनि देबय पड़य तँ ओ कम अछि। उदाहरण दऽ समझाबथि।

उदयचन्द्र झा 'विनोद'

उदयचन्द्र झा 'विनोद' मैथिलीक साहित्यकारमे 'विनोदजी' क नामसँ प्रसिद्ध छथि। जेहने स्वच्छ स्वभाव, तेहने साफ लेखन। हिनक जन्म 5 अप्रैल, 1943 कऽ भेलनि। जन्मस्थान छनि दुलहा गाम (मधुबनी), मुदा वासी छथि रहिका गामक। भारत सरकारक ए. जी. औफिसमे उच्च पदस्थ अधिकारीक रूपमे सेवानिवृत भेलाक बाद मिथिला विश्वविद्यालयमे वित्त पदाधिकारीक रूपमे कार्यरत छथि।

'विनोद' कथा, नाटक, निबन्ध आदि अनेक विधामे लेखन कयने छथि, किन्तु कविक रूपमे हिनक ख्याति सर्वाधिक अछि। मूलत: आ मुख्यत: ई कविए छथि। हिनक दसटा काव्य-संकलन प्रकाशित अछि। आजुक स्थितिसँ जुड़ल हिनक सहज आ सरल कविता लोकक लेल अत्यन्त आकर्षक ओ मनमोहक होइत अछि। इएह कारण अछि जे हिनक कविता जतबे पढ़ल जाइत अछि ततबे सुनलो जाइत अछि। कवि सम्मेलनोमे ई खूब जमैत छथि। माटिपानि, लोकवेद, घर-बाहर आदि पत्रिकाक यशस्वी सम्पादकक रूपमे हिनक प्रसिद्धि छनि। हिनका यात्री चेतना पुरस्कार तथा मिथिला विभूति सम्मान भेटल छनि।

काव्य सन्दर्भ -'कहलनि पत्नी' नामक कविता-संग्रहसँ संकलित प्रस्तुत कवितामे बच्चाक महत्त्व देखाओल गेल अछि। बच्चा ओ आधार अछि जे व्यक्तिगत रूपमे माय-बापेकेँ नहि, सामूहिक रूपमे सम्पूर्ण सृष्टिकेँ विकसित होयबाक, फुलयबाक आ फड़बाक अवसर दैत अछि। बच्चा नहि रहत तऽ मनुक्ख नहि रहत, संसार नहि रहत। बच्चा संघर्षशील बनबैत अछि। जीबाक लेल स्नेह-रागक भावना भरैत अछि। तेँ बच्चाक महत्त्व बुझबाक चाही। ओकर विकास लेल सतत सचेष्ट रहक चाही। बच्चाक स्वास्थ्य आ पढ़ाइ-लिखाइ पर ध्यान देबाक चाही। कवि एहि कवितामे उपदेश नहि, सन्देश दैत छथि जे अत्यन्त हृदयग्राही अछि। जीवन आ जगतक स्थायित्व तथा विकासक मूलमंत्र बच्चा अछि।

बच्चा

जीवाक लेल, जगत लेल
आवश्यक होइछ बच्चा
वर्त्तमान होइछ- भविष्य होइछ
जीवनक अर्थ होइछ बच्चा
ओ बकलेल छथि जे कहैत छथि
बच्चा केँ व्यर्थ।

संघर्षरत जीवनक नारा होइछ
बुढ़ापाक सहारा होइछ
जीवन-धाराक कूल-प्रकृतिक वनफूल
सृष्टिक अनुकूल होइछ बच्चा
ओ ढहलेल छथि जे एकरा
बूझथि जानक जपाल
ओ कंगाल छथि।

बच्चा जीवनक मिठासे नहि
कोतवाल हाथक गड़ाँसो होइछ
सम्बन्ध - सरोकार
तमाम कारोबारक प्रेरणा होइछ बच्चा
जीवनाकाशक ध्रुवतारा
दिशा-दशाक ज्ञान दैछ
जीवन केँ मान दैछ बच्चा।

बच्चा कें ओहिना नहि कहल
गेल छल भगवान
ओहिना नहि प्रिय भेल बाललीला
बच्चा संधान होइछ
परम्पराक कड़िए टा नहि
सन्तान होइछ बच्चा
बच्चा नहि तऽ किछु नहि
कतहु नहि
ककरो नहि।

शब्दार्थ

बकलेल : बुड़िबक , अज्ञानी
ढहलेल : बकलेल, अज्ञानी
संधान : अन्वेषण खोज

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'बच्चा' केर रचयिता छथि

(क) सुकान्त सोम (ख) उदयचन्द्र झा 'विनोद'

(ग) बुद्धिनाथ मिश्र

(i) उदयचन्द्र झा 'विनोद'क रचना छनि

(क) रौदी अछि (ख) बच्चा

(ग) हाथ (घ) वन्दना

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) जीवनक अर्थ होइछ .... ।

(ii) .... सहारा होइछ ।

(iii) दिशा-दशाक .... दैछ ।

(iv) बच्चा नहि तऽ .... नहि ।

3. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) बच्चा ककरा कहल जाइछ ?

(ii) बच्चाक की अर्थ अछि ?

(iii) बच्चा बुढ़ापाक सहारा कोना होइछ ?

(iv) बच्चाकेँ जीवनक ध्रुवतारा कहल जाइछ किनका ?

(v) बाललीला किएक प्रिय भेल।

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) बच्चाक महत्ता पर प्रकाश दिअ।

(ii) पठित पाठक सारांश लिखू।

(iii) 'बच्चा' शीर्षक कविताक भाव लिखू।

(iv) पठित कवितामे कवि की कहय चाहैत छथि ?

(v) बच्चा परम्पराक कड़ी थिक - विवेचना करू ।

5. सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) जीवाक लेल, जगत लेल
आवश्यक होइछ बच्चा
वर्त्तमान होइछ- भविष्य होइछ
जीवनक अर्थ होइछ बच्चा

(ii) बच्चा कें ओहिना नहि कहल
गेल छल भगवान
ओहिना नहि प्रिय भेल बाललीला
बच्चा संधान होइछ

गतिविधि -

1. 'बच्चा' पर कविता कोनो आओर कवि लिखने छथि ? ताकू।
2. बच्चा देश व समाजक भविष्य होइछ। छात्र लोकनि पक्ष व विपक्षमे अपन-अपन तर्क देथि ।
3. वीर बालकक कथा छात्र वर्गमे सुनाबथि।
4. भगवानक बाललीला पर आधारित लघु एकांकीक मंचन करू।
5. बच्चाक सामान्य दशाक वर्णन करू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ वीर बालकक कथा सुनाबथि ।
2. वीर बालक पर आधारित कोनो कविताकेँ शिक्षक सस्वर पाठ कऽ सुनाबथि।
3. बालक देशक भविष्य होइछ-विस्तारपूर्वक शिक्षक छात्रकेँ अवगत कराबथि।
4. कृष्णक बाललीलाक कथाक चर्चा छात्रक बीच करथि।
5. एकलव्य, अभिमन्यु आदिक कथासँ छात्रकेँ परिचित कराबथि।

बुद्धिनाथ मिश्र

बुद्धिनाथ मिश्र मैथिलीक नवगीतकार छथि। मैथिलीमे गीत रचना बड़ पुरान अछि। मुदा नवगीत हाल-सालक काव्य-विधा थिक। जीवन आ जगतकेँ आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे देखब आ राखब एकर मुख्य विशेषता अछि। विषये नहि, शिल्प आ भाषा सेहो नवीन अछि। बुद्धिनाथ मिश्र मैथिलीक नवगीतकारमे अग्रगण्य छथि। हिनक जन्म मई, 1949मे भेलनि। समस्तीपुर जिलाक देवधा गाम हिनक जन्म स्थान छनि। हिनक प्रारंभिक शिक्षा वाराणसीमे संस्कृत शिक्षा- पद्धतिसँ भेलनि, मुदा ई. एम. ए. कयलनि अंग्रेजी आ हिन्दीमे। 'यर्थाथवाद और हिन्दी नवगीत' पर हिनका पीएच.डी.क उपाधि भेटलनि। लगभग गत चालीस वर्षसँ ई मैथिली आ हिन्दीमे निरन्तर लिखि रहलाह अछि। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित छनि, मुदा मैथिलीमे प्रकाशनाधीने छनि। मैथिली हिन्दी साहित्यकारक रूपमे विश्वक अनेक देशक भ्रमण कयने छथि। सम्प्रति ओएनजीसीक मुख्यालयमे मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) पद पर कार्यरत छथि।

काव्य सन्दर्भ 'भाषा' - पत्रिकासँ संकलित 'रौदी अछि' मूलतः चेतना-गीत अछि। एकर उद्देश्य छैक जनतामे जागरण आनब, ओकरा सक्रिय करब। मिथिलामे बाढ़ि अबैत अछि, रौदी होइत अछि, नाना प्रकारक विपत्ति पड़ैत अछि, मुदा एहिठामक लोक ओकरा लिखलाहा मानि कऽ बैसल रहैत अछि। एतबे नहि, अपन अतीत के दोहाइ दैत रहब, हमरा सभक आदति भऽ गेल अछि। गीतकार एही स्वभाव पर प्रहार करैत क्रियाशील होयबाक बात कहैत छथि। कोढ़ि नहि बनी, दुराचारक विरोध करी -आइ मिथिलामे कि सौंसे देशमे एकरे आवश्यकता अछि।

रौदी अछि

रौदी अछि, दाही अछि
हमरा ले' धैन सन।
गामक तबाही अछि
हमरा ले' धैन सन।।
हम महान छी, चटइत
तरबा इतिहास अछि
विपदेसँ गढ़ल हमर
व्यक्तिगत विकास अछि
पुस्त-पुस्तसँ सूर्यक रथ जोतल लोकपर
पड़इत अछाँही अछि
हमरा ले' धैन सन।
हम देशक कर्णधार
हमरहिसँ देस अछि
भासनमे हम, रनमे
राजा सलहेस अछि
सरनागत- पालक हम, तेँ चारू सीमापर
ई आवाजाही अछि
हमरा ले' धैन सन।
अहाँ धरापुत्र, धरापर
अहींक घाम खसय

शीत-तापहीन हमर

परिवारक राज रहय

न्याय वैह जे हमरा प्रिय, हमरे हितमे हो

सत्यक गवाही अछि

हमरा ले' धैन सन।

शब्दार्थ

धैन सन	:	निफिक्र, बेपरबाह
विपदा	:	विपत्ति, संकट
सरनागत	:	शरणमे आयल
पालक	:	पालन करयबाला
पुस्त	:	कुल, वंश
अछाही	:	अछाह, छाया

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) बुद्धिनाथ मिश्रक रचना छनि

(क) वन्दना (ख) रौदी अछि

(ग) शिवगीत (घ) हाथ

(ii) 'रौदी अछि' शीर्षक कविताक रचयिता छथि

(क) बुद्धिनाथ मिश्र (ख) सुकान्त सोम

(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) विद्यानाथ झा 'विदित'

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) हमरा ले' .... सन

(ii) हम देसक ....

(iii) न्याय वैह जे हमरा .... , हमरे हित हो।

3. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) रौदीक रचनाकार के छथि ?

(ii) 'धैन-सन' शब्दक अर्थ लिखू।

(iii) पठित पाठमे केहन न्यायक चर्चा कयल गेल अछि।

(iv) 'रौदी-दाही' सँ कविक की तात्पर्य अछि ।

(v) हम महान छी कोन अर्थमे कहल गेल अछि।

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'रौदी-अछि' कविताक सारांश लिखू।

(ii) पठित पाठसँ की प्रेरणा भेटैत अछि ?

(iii) 'रौदी-अछि' कवितामे कवि आमलोककेँ कर्त्तव्य-बोध करबैत छथि-कोना ?

(iv) रौदी आ दाहीसँ गाम तबाह अछि एहि पर निबन्ध लिखू।

5. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) रौदी अछि, दाही अछि
हमरा ले' धैन सन
गामक तबाही अछि
हमरा ले' धैन सन

(ii) न्याय वैह जे हमरा प्रिय, हमरे हितमे हो
सत्यक गवाही अछि
हमरा ले' धैन सन।

गतिविधि -

1. 'रौदी आ दाही' सँ सम्बन्धित आओर कोनो कविता लिखू।

2. निम्नलिखित पाँती सभक अर्थ स्पष्ट करू:

सरनागत- पालक हम, तेँ चारू सीमापर
ई आवाजाही अछि
हमरा ले' धैन सन

3. सूर्यक कोनो दूटा पर्यायवाची शब्द लिखू।

4. एहि कविताकेँ कंठस्थ करैत सस्वर पाठ करू।

निर्देश-

1. शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्रकेँ रौदी आ दाहीक विशेषार्थसँ परिचित करांबथि।

2. लोकक कथनी आ करनीक सम्बन्धमे व्यक्त भेल विचारसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।

3. एहि व्यंग्य कविताक प्रेरक भावकेँ स्पष्ट करैत छात्रक बीच विचार विमर्श कार्यक्रम कयल जाय।

सुकान्त सोम

मैथिली साहित्यक प्रगतिशील रचनाकारमे सुकान्त सोम अग्रगण्य छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1950 ई. मे भेलनि। साहित्य लेखन आ पत्रकारिता दिस हिनक झुकाव छात्रावस्थेसँ छनि। पत्रकारक रूपमे ई देशक विभिन्न समाचार-पत्रक सम्पादन-कार्यसँ सम्बद्ध रहलाह अछि। हिन्दी समाचार-पत्र 'हिन्दुस्तान' क मुजफ्फरपुर संस्करणक लगभग दस वर्षसँ सम्पादक छथि।

सुकान्त सोमकेँ जन सामान्य शक्ति-सामर्थ्य पर अटूट विश्वास छनि। ओकर हेम क्षेमक अनवरत चिन्ता छनि। यैह विश्वास आ चिन्ता हिनका रचनाकार रूपमे सक्रिय करैत अछि। कविता हो कि कथा, निबन्ध हो कि समीक्षा - दीन-हीन किसान-मजदूरक आँखिसँ स्थिति आ समस्याकेँ देखब सुकान्त सोमक विशेषता थिक। ई लिखने त बहुत छथि, मुदा पुस्तक रूपमे प्रकाशित एकेटा कविता-संग्रह छनि- 'निज सम्वाददाता द्वारा'। 'भोरक प्रतीक्षा मे' सेहो हिनक किछु कविता संकलित अछि।

काव्य सन्दर्भ-निज सम्वाददाता द्वारासँ संकलित 'हाथ' मेहनतिया मजदूरक कविता थिक। ओकर ताकतिक कविता थिक। एहि कवितामे श्रमिक आ श्रम -शक्तिक अनेक रूप अछि। माटि कोड़ि अन्न उपजा कऽ जीवनाधार दैत किसानसँ सारिलकेँ दू फाँक करैत मजदूर धरिक उदाहरण. द्वारा कवि एहि वर्गक लोकक उपयोगिता ओ अनिवार्यताकेँ देखार कयलनि अछि।

हाथ

यैह हाथ तऽ काज करैत अछि
यैह हाथ माटि कोड़ि फसिलक विकास करैत अछि
यैह हाथ जनैत अछि
कतेक उर्वर होइत छै माटि
घाम आ श्रमक सम्बन्ध
यैह हाथ काज करैत अछि ।

यैह हाथ काज करैत अछि
यैह हाथ जनैत अछि की अन्तर छै ठाम-कुठामक पानिमे
समुद्रक नोनछराइन पानि आ
गंगाक शीतल पवित्र जल
खेतक फसिल मे कते लाभप्रद होइछ
यैह हाथ जनैत अछि।

यैह हाथ काज करैत अछि
यैह हाथ गाछ कटैत सारिल सँ टकराइत अछि
यैह हाथ जनैत अछि
पाँखुरक ताकति आ कुरहड़िक चोट
सारिलकेँ कतेक ठामसँ तोड़ैत छै
यैह हाथ कुरहड़ि आ हाथक सम्बन्ध जनैत अछि
यैह हाथ काज करैत अछि।

शब्दार्थ

उर्वर : उपजाउ

नोनछराइन : कनेक-कनेक नोन ओ क्षारक स्वादवाला

सारिल : सीसो आदि काठमे अधिक घनत्व बला ललौन अंश जे बीचमे रहैत अछि, सार भाग

पाँखुर : कान्ह आ बाँहिक मिलन स्थान

कुरहड़ि : लोहसँ बनल औजार जाहिसँ काठ काटल जाइत अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'हाथ' कविताक रचयिता छथि।

(क) सुकान्त सोम (ख) विद्यानाथ झा 'विदित'

(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) बुद्धिनाथ मिश्र

(i) सुकान्त सोमक रचना छनि -

(क) रौदी अछि (ख) हाथ

(ग) बच्चा (घ) वन्दना

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) यैह .... काज करैत अछि

(ii) यैह हाथ .... अछि

(iii) सारिलकँ .... ठामसँ तोड़ैत छै

(iv) गंगाक .... शीतल पवित्र जल

3. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) हाथ की करैत अछि ?

(ii) हाथसँ कयल गेल कोनो दू काजक नाम लिखू।

(iii) घाम आ श्रमक सम्बन्ध कोना व्यक्त कयल गेल अछि।

(iv) कुरहड़ि ककरा कहल जाइत अछि ?

(v) सारिलकेँ काठसँ कोना फराक कयल जाइत अछि ?

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'हाथ' कविताक सारांश लिखू।

(ii) पठित कवितामे कवि श्रम आ श्रमिकक महत्त्व पर विचार कयलनि अछि, कोना आ किएक?

(iii) 'हाथ' कविताक वर्णन करू।

(iv) हाथक महत्ता पर प्रकाश दिअ।

(v) निम्न शब्दक अर्थ लिखू : - घाम, ठाम-कुठाम, सारिल, गाछ।

5. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) यैह हाथ तऽ काज करैत अछि
यैह हाथ माटि कोड़ि फसिलक विकास करैत अछि
यैह हाथ जनैत अछि
कतेक उर्वर होइत छै माटि

(ii) यैह हाथ काज करैत अछि
यैह हाथ गाछ कटैत सारिल सँ टकराइत अछि
यैह हाथ जनैत अछि
पाँखुरक ताकति आ कुरहड़िक चोट

गतिविधि -

1. 'हाथ' कविताकेँ सुस्पष्ट स्वरमे शिक्षककेँ सुनाउ।
2. मनुक्ख जन्म लैत अछि मात्र खयबाक लेल नहि, काज करबाक लेल सेहो- एहि पर एकटा निबन्ध लिखू।

3. हाथसँ कोन-कोन काजक एहि कवितामे उल्लेख कयल गेल अछि- छात्र आपसमे चर्चा करथि।

4. पठित पाठसँ पाँचटा संज्ञा शब्द चुनि विशेषण बनाउ।

5. पठित पाठमे आयल पाँच तद्‌भव शब्दक सूची बनाउ एवं वाक्यमे प्रयोग करू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ शारीरिक श्रमक महत्वसँ परिचित कराबथि।
2. शिक्षक हाथक पर्यायवाची शब्दक उल्लेख देथि।
3. श्रमिक पर रचित आन कविक रचनासँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित

तारानन्द वियोगी

बीसम शतीक नवम दशकक साहित्यकारमे तारानन्द वियोगी प्रमुख छथि। मई, 1966 मे हिनक जन्म भेलनि। हिनक जन्मभूमि छनि मिथिलाक जानल-मानल सिद्धपीठ – महिषी। संस्कृत साहित्यमे आचार्य, एम. ए. आ पीएच. डी. कयलाक बाद किछु दिन शिक्षक रहलाह। सम्प्रति बिहार प्रशासनिक सेवाक अधिकारी छथि।

तारानन्द वियोगी धुरन्धर लेखक छथि। लिखबो कम नहि कयलनि अछि आ जे लिखलनि अछि से चर्चा एवं विमर्शक विषय रहल अछि। गजल-कविता, कथा-लघुकथा, जीवनी-संस्मरण आ निबन्ध समीक्षा – सभ क्षेत्रमे हिनक कलम समान गतिसँ चलैत अछि। यात्री पर लिखित 'तुमि चिर सारथि' अखिल भारतीय स्तर पर चर्चित भेलनि अछि। अनुवादक रूपमे सेहो हिनक ख्याति छनि।

काव्य सन्दर्भ – प्रस्तुत कविता हिनक कविता -'संग्रह हस्तक्षेप' सँ लेल गेल अछि। एहिमे मायक प्रति हिनक उद्गार व्यक्त भेल अछि। कविता सम्बोधित अछि दीदीकेँ। दीदी पीसी आ जेठ बहिन दुनू कँ कहल जाइत अछि। मायक प्रति दीदीक भाव- सिक्त अभिव्यक्तिक सीमांकन करैत कवि प्रकारान्तरसँ अपन असीम श्रद्धा निवेदित करैत छथि। वस्तुतः ई मायक काव्य-तर्पण थिक।

माँ

अपन मोनक एक-एक भाव केँ
उतारि लिय' कागत पर,
अपन सोचक एक-एक सन्दर्भ केर
क' लिय' व्याख्या,
हृदयक गहन तल पर घटित होब' बला
एक-एक घटनाक
विवरण द' लिय' हमरा
मुदा दीदी!
अहाँ नहि लिखि पायब कहियो
माँ पर कविता।
शब्द चूकि जाइत अछि
संग नहि द' पबैत अछि छन्द
अलंकारक कोनहु टा छटा
छुबि नहि पबैछ माँक चरण
दीदी !
ओ वृत्त थिकीह माँ
जकर प्रदक्षिणा क' नहि पबैछ कोनो तन्त्र
ओ देवता थिकीह माँ
जनिकर निर्वचन लेल रचल नहि गेल कोनो मन्त्र।
अहाँक प्राण थिकीह माँ
अहाँक श्वासक सुरभि
अहाँक अस्तित्वक गरिमा थिकीह माँ ।

तैयार भने क' लिय' अहाँ
सर्वविध सम्बन्धक पोस्टमार्टम रिपोर्ट
एक-एक भाव - भूमि पर
रचैत चलि जाउ एक-एक अट्टालिका
मुदा हमर प्रिय दीदी !
अहाँ नहि लिखि सकब कहियो
माँ पर कविता।

शब्दार्थ

वृत्त : गोलाकार रेखा , इतिहास, आचरण
प्रदक्षिणा : देवताक प्रतिमाक चारुकात घूमव
निर्वचन : व्युत्पत्ति करब, अर्थ करब।
सुरभि : सुगन्धि

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'माँ' केर रचयिता छथि ?

(क) तारानन्द वियोगी (ख) बुद्धिनाथ मिश्र
(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

(ii) तारानन्द वियोगीक रचना अछि

(क) माँ (ख) हाथ
(ग) रौदी अछि (घ) वन्दना

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) अहाँक प्राण थिकीह ....
(ii) छुबि नहि पबैछ .... चरण
(iii) ओ देवता थिकीह ....
(iv) ओ वृत्त थिकीह ....

3. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) पठित पाठमे माँक प्रति केहन भाव व्यक्त भेल अछि ?

(ii) माँ पर कविता लिखब कठिन अछि, कोना ?

(iii) कोनहु अलंकारसँ माँ केँ अलंकृत नहि कयल सकैत अछि- एकर की तात्पर्य अछि ?

(iv) माँ केँ कोनो छन्दमे नहि समेटल जा सकैत अछि – एकर की अभिप्राय ?

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'माँ' कवितामे कवि की कहय चाहैत छथि ?

(ii) 'माँ' कविता बेर-बेर पढ़ू।

(iii) पठित पाठक आधार मातृ-शक्ति पर विमर्श करू।

(iv) 'माँ' पर एकटा निबन्ध लिखू।

(v) 'माँ' पर कविता लिखब कठिन अछि – स्पष्ट करू।

5. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) शब्द चूकि जाइत अछि
संग नहि द' पबैत अछि छन्द
अलंकारक कोनहु टा छटा
छुबि नहि पबैछ माँक चरण

(ii) अहाँक प्राण थिकीह माँ
अहाँक श्वासक सुरभि
अहाँक अस्तित्वक गरिमा थिकीह माँ ।

गतिविधि -

1. 'माँ' शीर्षक पर कोनो आन कविता लिखू।
2. माँ क महत्ता पर आपसमे विचार करू।
3. ''जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' .... एहिपर निबन्ध लिखू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ माँ पर कोनो कथा सुनाबथि।
2. कोनो परिवारमे माँक भूमिकासँ शिक्षक छात्रकेँ जनतब कराबथि।

12B

वाग्विलास-खण्ड

-12A

बच्चा

प्रेमचन्द

अनुवादः आशुतोष झा

लोक गंगूकेँ ब्राह्मण कहैत छैक। ओकरा अपना सेहो सैह बुझाइत छैक। हमर आन सभटा खबास हमर समक्ष झुकैत अछि। मुदा गंगू हमरा ओना कहियो अभिवादन नहि करैत अछि। संभवतः ओकरा होइत छैक जे हमही ओकरा प्रणाम करियैक। ओ कखनो कोनो ऐंठ थारी-बासन नहि छुबैत अछि। हमरा अहू बातक साहस नहि अछि जे गर्मीक समयमे ओकरा पंखा हौंक' लय कहियैक। कखनो काल क' जखन कियो आन ल'ग मे नहि रहैत छैक आ हम पसेनासँ तर रहैत छी ओ पंखा उठा लैत अछि। मुदा ओकर रंगति तेहन लगैत रहैत छैक जेना ओ हमर बड्ड पैघ उपकार क' रहल हो। ओ पिनकाह सेहो अछि आ कनियो घुड़की नहि सहि सकैत अछि। ओकरा संगी-साथी नहियेँक बरोबरि छैक। सईस अथवा कोनो नोकर संग बैसब ओकरा अपन शानक विरुद्ध बुझाइत छैक। हम ओकरा कहियो ककरो संग मैत्रीपूर्ण व्यवहार करैत नहि देखने छियैक। आ ने ओ कहियो मेला-तमासा देख' लय जाइत अछि।

ओ पूजा कहियो नहि करैत अछि आ ने कहियो नदीमे नहाइ लय जाइत अछि। ओ पूर्णतः निरक्षर अछि। तैयो ओ चाहैत अछि जे कोनो ब्राह्मण के भेट' बला सम्मान ओकरो भेटै। आ से कियेक नहि हो ? जँ आर लोक सभ अपन पुरखाक द्वारा छोड़ल धनक आधार पर इज्जति पाब' चाहैत अछि तँ गंगू सेहो अपन वंशक आधार पर सम्मान अवश्ये प्राप्त कर'-चाहत।

हम अपन खबास सभसँ बिनु आवश्यकताके गप्प नै करैत छी। ओकरा सभकेँ कठोर निर्देश छैक जे ओ सभ हमर एकान्ततामे व्यवधान नहि करय यावत् तक कि ओकरा सभकेँ हमरा लग पठाओल नहि गेल हो। छोट-मोट काज सभ जेना एक गिलास पानि ल' लेब, जुत्ता पहिरब अथवा लेम्प जरा लेब इत्यादिक लेल कोनो खबास केँ बजाब' सँ बेसी हमरा अपने क' लेब पसिन्न अछि। ओ हमरा स्वतंत्रता आ आत्मविश्वासक अनुभूति दिय' बैत अछि। नोकर सभ हमर आदतिसँ परिचित भ' गेल अछि आ ओ सभ बिरले हमरा पेरसान करैत अछि। यदि

ओ सभ कखनो बिनु बजओने हमरा लग अबैत अछि तँ ओ दरमाहाक अग्रिम भुगतानक हेतु निवेदन करबा लय अथवा आन नोकर सभक विरुद्ध नालिस करबा लय। मुदा एहि दुनू क्रिया के हम निंदनीय बुझैत छी। जखन ओकरा सभ के हम नियमित रूपसँ भुगतान कइये दैत छियैक आ पर्याप्त सेहो तखन हमरा एकर कोनो कारण नहि बुझाइत अछि जे ओ सभ अपन दरमाहा के पन्द्रहे दिनमे समाप्त क' दियए। आ चुगिलखोरी के हम मनुष्यक बहुत पैघ कमजोरी अथवा चाटुकारिताक एकटा प्रकार बुझैत छी। ई दुनू अधम कार्य थिक।

एक दिन भिनसरमे गंगू बिनु बजओने हमरा लग आयल। हम खौंझा गेलहुँ। क्षुब्ध होइत ओकरा पुछलहुँ जे ओ कियेक आयल अछि। गंगूक चेहरासँ लगैत छल जे ओ किछु कह' चाहैत छल मुदा पूर्ण प्रयासक बादो ओकर ठोर पर शब्द नहि आबि रहल छलैक। कने रुकि क' हम फेरसँ पुछलियैक, "की गप्प छैक ? तो बजैत कियेक ने छह ? तोरा ई बूझल छह जे हमरा भिनसरमे टहलबाक लेल जेबामे देरी भऽ रहल अछि!'' कने रुकि-रुकि क' जवाब देलक, "कृपा क' कँ अहाँ जयबामे देरी जुनि करियौ। हम कखनहुँ बादमे आबि जायब।'' ई तँ आओर खराब भेल, हम सोचलहुँ। तखन हम हड़बड़ीमे छलहुँ गंगू अपन कथा संक्षेपहिमे समाप्त क' दितय। आ जखन ओ ई बुझि के आओत जे हम बेसी फुरसतिमे छी तँ हमर कैक घंटाक समय ओ नष्ट क' सकैत अछि। ओ तखनहि टा हमरा व्यस्त बुझय जखन हम पढ़ैत अथवा लिखैत रहैत छलहुँ। जखन हमरा ओ किछु सोचबाक मूडमे एसकर पाबय तँ ओकरा होइ जे हम व्यर्थक समय बिता रहल छी। ई अवश्यम्भावी छलैक जे एहने कोनो क्षणमे ओ हमरासँ आबि सटत, एहि गप्पसँ पूर्णत: अनभिज्ञ जे ओ समय हमरा लेल कतेक मूल्यवान छल।

तँ हम चाहैत छलहुँ जे ओकरासँ ओतहि आ तखने छुटकारा भेटि जाय। ओकरासँ हम कहलियैक, ''जँ तोँ अग्रिम भुगतानक लेल आयल छह तँ निश्चिन्त रह' ओ तोरा नै भेटतह।''

"हम अग्रिम भुगतान नै चाहैत छी।'' गंगू बाजल आ जोड़लक, '' अग्रिम भुगतानक लेल हम अहाँकेँ कहियो नै कहने छी।''

"तखन तोरा जरूर ककरो विरुद्ध किछु नालिस करबाक हेतह! तोरा बुझल छह जे चुगलखोरीसँ हमरा कतेक घृणा अछि।''

"नै महाशय, हमरा ककरो विरुद्ध कोनो नालिस नै करबाक अछि।''

"तखन कोन वस्तुक लेल तोँ हमरा तंग कर' आयल छह ?'' हम अगुताइत बजलहुँ। गंगू अपन रहस्य खोलबाक एक बेर आर प्रयास केलक। हम ओकर चेहरासँ ई बुझि सकैत

छलहुँ जे अपन गप्प कहबाक ओ शक्ति जुटा रहल छल। अंतमे ओ बाजि उठल, "श्रीमान हम काज छोड़' चाहैत छी। आब हम अहाँक सेवा नहि क' सकब।''

ई अपन प्रकारक पहिल आग्रह छलैक । मोनमे आहतक अनुभूति भेल। हम एकटा आदर्श मालिक मानल जाइत छलहुँ आ नोकर खबास सभ हमरा ओतय रहब अपन भाग्य बुझैत छल।

"तोँ किएक जाय चाहैत छह ?'' हम पुछलियैक।

"मालिक अहाँ दयाक मूर्ति छी।'' ओ कहलक, फेर बाज' लागल, "यावत् धरि कोनो विशेष कारण नहि होइ ताबत अहाँकेँ के छोड़' चाहत ? हम अपनाकेँ एहन परिस्थितिमे पबै छी जत' हमरा लग कोनो विकल्प नहि अछि। हम नै चाहैत छी जे हमरा चलैत लोक अहाँ पर आगुंर उठाबय।''

ई अत्यन्त कुतूहलक गप्प छल। हम भिनसरमे अपन टहलबा द' पूर्णत: बिसरि गेल छलहुँ । कुरसी पर बैसैत ओकरासँ हम कहलियैक, "तो एना बुझौअलिमे कियेक गप्प क' रहल छह ? साफ-साफ कह' ने जे तोहर मोनमे की छह ?'' गंगू फेरसँ रुकि-रुकि क' बाज' लागल, "मालिक असलमे बात छैक जे.... ओ मौगी जेकरा हालहिमे विधवा-घरसँ निकालि देल गेल छैक.................... ओ गोमती देवी ......।'' आ बिनु अपन वाक्य पूरा केने ओ चुप्प भ' गेल।

अधीरतापूर्वक हम पुछलियैक, "तँ ओकरासँ तोहर नोकरीकेँ कोन सम्बन्ध छैक ?''

"मालिक ओकरासँ हम बियाह कर' चाहैत छी।'' गंगू बाजल छल।

हम विस्मयसँ ओकरा दिस देखलहुँ। ई पुरानपंथी ब्राह्मण, जेकरा आधुनिक सभ्यता छूनौ नहि छलैक एहन स्त्रीसँ कोना विवाह करबाक निर्णय नेने छल जकरा कोनो स्वाभिमानी व्यक्ति अपन घरक लगो आब' देब पसिन्दनहि करत ? गोमती हमर सबहक शान्त मोहल्लाकेँ आन्दोलित कऽ देने छल। किछु वर्ष पहिने ओ विधवा-घरमे प्रवेश केलक। विधवा घरक पदाधिकारीगण दू बेर ओकर बियाह करओलथिन मुदा दुनू बेर ओ एक-दू सप्ताहक भीतर घुरिकेँ चल आयल। अंततोगत्वा विधवा-घर ओकरा निकालि बाहर करबाक निर्णय लेलक। आ आब मोहल्लहिमे एकटा कमरा भाड़ा पर ल' नेने छल आ प्रेमातुर छौंड़ा सभक लेल अत्यन्त आकर्षणक वस्तु भ' गेल छल।

हमरा गंगू पर क्रोधो भेल आ ओकरासँ सहानुभूति सेहो। "ई बूड़ि के बियाह करबाक लेल कोनो आन मौंगी कियेक नहि भेटलैक ?'' हमरा मोनमे भेल छल। हमरा विश्वास छल जे ओ मौगी एकरा लग किछु दिनसँ बेसी नहि टिकतैक। जँ गंगू आर्थिक रूपेँ सुदृढ़ रहितय तँ छः मासक लग-पास ओकरा संग ओ रहि जइतय मुदा हमरा विश्वास छल जे एखुनका परिस्थितिमे ई विवाह किछु दिनसँ बेसी नहि टिकतैक।

"ओकर पछिलुका जिन्दगी द' तोरा बुझल छह?'' हम ओकरासँ पुछलियैक।

"मालिक ओ सभ झूठ बात छैक।'' ओ पूर्ण दृढ़ताक संग बाजल छल, " बिनु कोनो कारणकेँ लोक सभ ओकरा बदनाम करैत छैक।''

"की व्यर्थक गप्प करैत छह।'' हम कहलियैक, "एहि बातकेँ की तोँ अस्वीकार क' सकैत छह जे ओ तीन टा पतिकेँ छोड़ने अछि ?''

"ओ की करितस,'' गंगू शांतिपूर्वक जवाब देने छल, "जेँ ओ सभ ओकरा निकालि देलकै ?''

"केहन बूड़ि छह तोँ !'' हम कहलियैक, "तोरा ई बुझाइत छह जे कियो व्यक्ति कोनो स्त्री सँ मात्र बियाह टा करबाक लेल आओत, विवाह पर हजारो टाका व्यय करत आ बिनु कारणें ओहि विवाहिता के अपना ओतय सँ निकालि देत ?''

गंगू कविजन्य उत्साह देखबैत कहलकं, "जत' प्रेम नै छैक, अहाँ उमेद नै क' सकैत छियैक जे कोनो मउगी अहाँ संगे रहि जायत। कोनो स्त्रीक हृदयकेँ अहाँ मात्र खेनाइ आ रहबाक सुविधा द' कँ नहि जीति सकैत छियैक। जे कियो गोमतीदेवीसँ बियाह केलक से सभ बुझलकै जे ओ सभ ओकरासँ विवाह कऽ केँ एकटा विधवा पर कृपा क' रहल छैक। आ ओ सभ ई मानि नेने छल जे गोमती ओकरा सभटाक हेतु सभ किछु केने जायत। मुदा ककरो हृदय जीतबाक लेल सभसँ पहिने अपनाकेँ बिसार' पड़ैत छैक। आ तकर अतिरिक्त, मालिक, ओकरा कखनो-काल दौर पड़ैत छैक। ओ तखन किछु-किछु अण्ड-बण्ड बाज' लगैत अछि आ बेहोस भ' जाइत अछि। लोक सभ कहैत छैक जे ओ कोनो डाइनक प्रभावमे अछि।

"आ' तो ओहन स्त्रीसँ विवाह कर' चाहैत छह।'' हम कहलियैक, "तोरा ई नहि बुझाइत छह जे तोँ विपत्तिकेँ निमन्त्रण द' रहल छहक ?''

शहीदक मुद्रामे गंगू बाजि उठल, "भगवान चाहलनि तँ ओकरा अपनएबाक उपरान्त हम अपनाकेँ कोनो योग्य बना सकब।''

"माने तोँ अंतिम फैसला ल' नेने छह ?'' हम पुछलियैक।

"हँ मालिक।'' ओकर जवाब छलैक।

"बेस ,'' हम कहलहुँ, "तखन हम तोहर नोकरी छोड़बाक प्रस्ताव स्वीकार करैत छियह।''

सामान्यत: हम पुरान रीति-रेवाज एवं निरर्थक परम्परा इत्यादिमे विश्वास नहि करैत छी! मुदा कोनो व्यक्ति जे एहन संदेहास्पद चरित्रक स्त्रीसँ विवाह करबा लय उद्यत अछि, तेहनकेँ अपन घर पर रखबामे हमरा खतरा बुझायल। ओ कैक प्रकारक समस्याक कारण भ' सकैत छल। हमरा जनैत ओहि स्त्रीसँ विवाह करबामे गंगू कोनो भुखायल मनुक्ख जकाँ व्यवहार क' रहल छल। ओ रोटीक टुकड़ा सुखायल आ कुस्वाद छल से तथ्य ओकरा लेल अर्थहीन छल। हमरा अलगे रहबामे बुद्धिमत्ता बुझायल।

पाँच मास गुजरि गेल। गंगू गोमतीसँ विवाह क' लेने छल। ओ ओही मोहल्लामे एक टा फूसक झोंपड़ीमे रह' लागल। ओ अपन गुजारा आब पैकारी क' के करैत छल। जखन कखनौ ओ हमरा रस्ता पर भेटाबय तँ हम रुकि क' ओकर कुशल क्षेम पुछैत छलहुँ। ओकर जिन्दगी हमरा लेल अत्यधिक रुचिक वस्तु भ' गेल छल। हम ई जानबाक लेल अगुतायल छलहुँ जे गंगूक दिवास्वप्न, दु:स्वप्नमे कहिया परिवर्तित होयत। मुदा हम ओकरा सदिखन प्रसन्न देखियैक। ओकर चेहरा पर रहि सकैत छैक। ओ प्रतिदिन लगभग एक टाका कमाइत छल। आश्रमक वस्तु सभ किनलाक बाद ओकरा लग लगभग दस आना बचि जाइत छलैक। आ ओहि दस आना पाइमे निश्चित रूपसँ कोनो अलौकिक शक्ति हेतैक जे ओकरा आत्मतुष्टि दैत छलैक।

एक दिन हम सुनलहुँ जे गोमती भागि गेल। नहि जानि कियेक मुदा हमरा अत्यंत आनन्द भेल छल। संभवत: गंगूक आत्मविश्वास आ सुख हमरा ओकरा प्रति ईर्ष्यालु बना देने छल। हम प्रसन्न छलहुँ जे अंतत: हमर कथन सही सिद्ध भेल। आब ओकरा बुझबामे एतैक जे, जे कियो ओकरा गोमतीसँ विवाह करबासँ रोकैत छलैक ओ सभ ओकर शुभ-चिन्तक छलैक। 'ओ केहन बूड़ि छल,' हम मोने-मोन सोचलहुँ, 'जे गोमतीसँ बियाह करब ओ अपन भाग्यक गप्प बुझलक। सैह टा नहि, ई बियाह करब ओकरा स्वर्गमे प्रवेश कर' जकाँ लागल छलैक।' हमरा ओकरासँ भेट करबाक बहुत उत्सुकता भेल छल।

ओहि दुपहरियामे जखन ओ भेटायल तँ ओ पूर्णत: टूटल लागि रहल छल। हमरा देखैत

ओ रूदन करऽ लागल आ कहलक, "बाबू, गोमती हमरा छोड़िकँ चल गेल अछि।

हम उपरी सहानुभूति देखबैत बजलहुँ, "हम तँ तोरा शुरूहे मे कहने छलियह जे ओकरासँ दूरे रहियह मुदा तो नहि सुनलहक। तोहर कोनो समान तँ ओ नहि ल' गेल छह ?"

गंगू हृदय पर रखैत तेना बाजल जेना कि हम कोनो पापक गप्प कहि देने होइयैक, "से नै कहियौ, बाबू' कोनो टा वस्तु नै ल' गेल अछि। ओकर अपनो समान सभ ओहिना पड़ल छैक। हमरा नहि बुझ' मे अबैत अछि जे ओकरा हमरामे कोन कमी लगलैक जे ओ हमरा छोड़िकँ जेबाक निर्णय केलक। हमरा विश्वास अछि हम ओकरा योग्य नहि छलियैक। ओ पढ़ल-लिखल छल आ हम पूर्णत: निरक्षर छी। आओर किछु दिन जँ हम ओकरा संग रहितियैक तँ ओ हमरा योग्य मनुक्ख बना दितय। ओ आन पुरुष सभक लेल जे हुअए, हमरा लेल तँ जरूरे भगवती छल। हमरासँ अवश्य कोनो गलती भ' गेल होयत जे गोमती हमरा छोड़बाक निर्णय लेलक।"

गंगूक गप्पसँ हमरा बड्ड निराशा भेल छल। हमरा विश्वास छल जे ओ हमरा गोमतीक विश्वासघात द' कहत आ तखन हमरा ओकरासँ सहानुभूति व्यक्त कर' पड़त। मुदा लगैत छल जे ओहि मूर्खक आँखि सभ एखनहु बन्द छलैक अथवा संभवत: ओकर ज्ञानक संवेद समाप्त भ' गेल छलैक।

हम कन परिहास करैत कहलियैक, "अर्थात् ओ कोनो वस्तु डेरा परसँ नै ल' गेल छह ?"

"नै एक्को पाइक वस्तु नहि।"

"आ ओ तोरा खूब मानैत छलह ?"

"बाबू, एहिसँ बेसी हम की कहि सकैत छी ? हम यावत् जीव ओकरा नहि बिसरि सकैत छी।"

"आ तैयो ओ तोरा छोड़बाक फैसला केलकह ?"

"तेकरे तँ हमरा आश्चर्य होइत अछि।"

"तोँ कहियो ई पुरान उक्ति सुनने छहक, 'चंचलता, तोहर नाम स्त्री छह।'?"

"ओह, बाबू से नहि कहियौ! ओकरा द' हम एक्को छन ओहेन बात नहि सोचि सकैत छी।"

"हँ मालिक, हमरा तावत तक चैन नै भेटत यावत हम ओकरा ताकि नहि लेबैक। हमरा

मात्र एतबा टा बुझबामे आबि जइतय जे ओकरा कत' ताकी! हमरा विश्वास अछि जे हमरा लग ओ घूमिके आबि जायत। हमरा ओकरा जाक' जरूर ताकबाक चाही। जँ जीवैत रहलहुँ त' घूमि क' आयब तँ अहाँसँ भेट करब

एहि घटनाक बाद हमरा नैनीताल जाय पड़ल। आ लगभग एक मासक बाद हम ओत' सँ घुरलहुँ। हम एखन कपड़ा सभ खोलनहि छलहुँ कि देखलियैक जे गंगू एकटा नवजात शिशुक संग ठाढ़ छल। ओ खुशीसँ गद्‌गद् छल। संभवत: नंद के सेहो भगवान कृष्णक जन्म पर एतेक खुशी नहि भेल होन्हि। ओकर चेहरा पर तेहने चमक छलैक जेहन कोनो भुखायल मनुक्खके भरि पेट खेनाइ भेटला पर होइत छैक। हम फेर हंसी करैत ओकरासँ पुछलियेक, "की तोरा गोमती देवी के कोनो खबरि भेटलह ? तोँ ओकरा ताक' लय जाय बला छलहक।''

प्रसन्नतासँ भरल गंगू बाजल छल, "अंतत: ओकरा हम ताकिये लेलियैक बाबूजी। ओ लखनऊक महिला अस्पतालमे भरती छल। ओ अपन एकटा सखीके कहि देने छलैक जे जँ हम बहुत घबड़ा जइयेक तँ हमरा ओकर पता-ठेकान ओ बता दियए। हम तहिना ई सुनलियैक हम तुरते लखनऊ गेलहुँ आ' ओकरा ल' अनलियेक। आ सौदामे हमरा ई बच्चा सेहो भेटल अछि।'' ओ ओहि बच्चा के हमरा ततबे गर्व सँ देखओलक जतबा गर्वसँ कोनो एथलीट अपन तुरत जीतल पदक देखाओत।

ओकर निर्लज्जता पर हमरा आश्चर्य भेल। ओकर गोमतीसँ विवाहक छओ मास नहि भेल छलैक ओ ओतेक गर्व सँ ओहि बच्चा के देखा रहल छल। हम व्यंगपूर्वक कहलियैक, "ओह तोरा एकटा बेटा सेहो भ' गेलह। संभवत: तैं गोमती भागि गेल छलह। तोरा विश्वास छह जे ई तोरे बच्चा छियह ?''

"हमर कियेक बाबू, ई तँ भगवानक बच्चा थिक।''

"एकर जन्म लखनऊमे भेलैक। छैक ने ?''

"हँ बाबू! काल्हिये तँ एकर एक मास पुरल छैक।''

"तोहर बियाहक कैक मास भेल छह ?''

"ई सातम मास भेल।''

"अर्थात् ई बच्चा तोहर बियाहक छह मासक भीतरे भ' गेलह ?''

"जी,'' गंगू बिना उत्तेजित भेने बाजल छल।

"आ तैयो तोँ एकरा अपन बच्चा कहैत छहक?''

"हँ मालिक।''

"तों होसमे तँ छह?'' हम पुछलियैक। हम निश्चित नहि छलहुँ जे हम जे गप्प ओकरा कह' चाहैत छलियैक से ओ ठीकेमे नहि बुझने छल आ कि ओ जानि के हमर गप्पक गलत अर्थ लगा रहल छल।

"ओकरा बड्ड कष्ट भेलैक,'' गंगू ओही सुरमे बजैत रहल, "बाबू , ओकरा लेल ई एक तरहक पुनर्जन्म छैक। पूरा तीन दिन आ तीन राति ओकरा दरद होइते रहलैक। ओह, ओ दरद असहनीय छलैक।''

ई हमरा लेल बीचमे टोकबाक बेर छल। हम कहलियैक, "अपन जीवनमे पहिले बेर बियाहक छओ मासक भीतर बच्चाक जन्म होइत सुनलियैक अछि।''

ई प्रश्न गंगू के आश्चर्यचकित क' देने छलैक। ओ कने नटखट मुस्कुराहटक संग कहलक, "तकर हमरा कहियो चिन्ता नै भेल अछि। संभवत: यैह कारण छल जे गोमती हमर घर छोड़ि देने छल। हम ओकरा कहलियैक जे जँ हमरासँ ओ प्रेम नहि करैत अछि तँ ओ आरामसँ जा सकैत अछि। हम ओकरा कहियो तंग नै करबैक। मुदा जँ ओकरा हमरासँ प्रेम होइ तँ ओहि बच्चाक चलैत हमरा सभ के अलग नै होयबाक चाही। हम एकरा अपन बच्चा जकाँ मानबैक। कियेक तँ आखिर जखन कोनो व्यक्ति बाओग कयल खेत लैत अछि तँ ओ ओकर उपज के मात्र ताहि द्वारय लेबासँ इन्कार नहि क' देतैक कियेक तँ कियो आओर ओकरा बाउग केने छल।''

हम जोरसँ हँसल छलहुँ। गंगूक भावनासँ हम अत्यंत द्रवित भेल छलहुँ । हम अपना के प्रचण्ड मूर्ख अनुभव केने छलहुँ। हम अपन हाथ बढ़ा देलियैक आ ओहि बच्चा के गंगूसँ ल' क' ओकरा चुम्मा लेलियैक। गंगू कहलक, "बाबू, अहाँ भद्रताक प्रतिमूर्त्ति छी। हम अधिक काल गोमतीसँ अहाँ द' गप्प करैत छी आ ओकरा कैक बेर एत' आबि क' अहाँसँ आशीर्वाद लेबा लय कहलियैक अछि। मुदा ओ ततेक ने लजकोटर अछि।''

हम आ भद्रताक प्रतिमूर्ति! हमर मध्यवर्गीय नैतिकता गंगूक साहस एवं सद्भावनाक समक्ष लज्जित भ' गेल छल।

"तों साधुताक प्रतिमूर्ति छह।'' हम कहलियैक, "आ ई बच्चा तकरामे मनोहरता आनि देने छह। चल' हम तोरा संग चलैत छियह गोमतीसँ भेट करबाक लेल।'' आ हम दूनू गोटय गंगूक झोंपड़ी पर गेल छलहुँ।

तेसर जीव

(उड़िया कथा)- मनोजदास

अनुवादक - उपेन्द्र दोषी

कालिह अपराह्नमे उत्तर दिस छोट सन पहाड़क शिखर पर पसरल रहए मेघक दूटा टुकड़ी : पर्वत - स्थवन -राजिक कबरीमे खोंसल दूटा फूल सन। किएक तँ सूर्यक किरणसँ ओ मेघखण्ड रंगीन भय गेल छल। हम ई लक्ष्य कयने रही कंकड़बला निर्जल पथपर साइकिल चलबैत काल। हम पश्चिमाभिमुख जाइत रही, तेँ बड़ी काल धरि हमर दृष्टि उत्तर दिगन्तक एहि सुकुमार दृश्यपर अँटकल रहल।

अनचोके हवाक एकटा झोंक आयल आ हमर पीठ पर एक थाप लगा चल गेल। हमरा अनुभव भेल जे मेघ भयानक रूप धऽ लेने अछि। मेघ उमड़ि-उमड़ि कऽ पूरा आकाशकेँ छापि लेने रहय। केवल पश्चिमी क्षितिज पर कने-कने लाली बाँचल रहैक। सेहो तुरंते झँपा गेलैक।

क्रमहि हवा सर्द होमय लगलैक । मेघ डराओन रूप धऽ धरतीपर आक्रमण हेतु तैयार छल। बरखा आबि गेल। हवाक एकटा प्रबल झोंक हमरा साइकिल सहित धरती पर पटकि देलक। हमर-पातर -छीतर कपड़ा भीजि कऽ सार्जेण्टक कपड़ा सन भारी भऽ गेल रहय। हम रुकि-रुकि साइकिलक पहियासँ कादो हटाबी आ कोनो तरहें साइकिलकेँ घीची। कोनो तरहें पर्वतक कातमे एकटा खोपड़ी -सन सरायमे पहुँचलहुँ। सोचने रही, एक कप चाह पीबि कऽ फेर आगाँ बढ़ब। मुदा ई स्थान तऽ हमरा लेखे पाँतरक गाछ भऽ गेल। अन्तमे निश्चय कयलहुँ जे राति एतहि गमाबी। एकर कच्चा मकानक छत पर एकटा कोठली रहैक। सरायक मालिक एक हाथमे लालटेन लेने आ दोसरा हाथेँ कीड़ा- मकोड़ाकेँ भगबैत, भीजल सीढ़ी पर देने हमरा ऊपर अनलक। कोठलीमे नान्हि टा जङला रहैक जाहिँस बजार आ मैदान दुनू दृश्य होइक। देबाल आ चार दुनू बीचक खाली जगह झरोखाक काज कऽ रहल छल। देबाल पर बाल गोपालक पोषणवाला पुरान कलेण्डर टाङल रहैक। इएह कलेण्डर कोठलीक शोभा छल। बालगोपालक पोषण कोनो बेबीफुडसँ भेल रहनि, तेँ ने ओ एतेक बलिष्ठ भऽ गल छलाह जे

ासानीसँ एकटा गेंडाकेँ नथने रहथि। सरायक मालिक अल्पभाषी रहय। किछुए शब्दमे ओ स्पष्ट कऽ देलक जे ई केबिन विशिष्ट थिक। जाहि गंभीरतासँ ओ ई सभ कहलक ताहिसँ हमरा कनेको अनसोहाँत नहि लगैत जँ ओ इहो कहैत जे निजाम अथवा आगा खाँ पर्यन्त एहिठाम राति बिताबऽ तखनहि आबि सकैत छथि जखन हुनका भाग्य संग देतनि। एहि विशिष्ट केबिनक किराया छल मात्र एक अठन्नी, पूरा एक दिन आ एक रातिक हेतु। लालटेन जँ भरि राति जरायब तँ पन्द्रह पाई अतिरिक्त । हम एक मग चाह पीलहुँ आ सरायक मालिककेँ विदा कयलहुँ। लालटेमो जल्दीए मिझा गेल, जाहिसँ एकटा गिरगिटकेँ बड़ निराशा भेलैक, कारण लालटेमक चारूकात औनाइत फतिंगा सभक लोभे ओ गिरगिट लालटेमक बहुत लग चल आयल रहय। हम कपड़ा बदललहुँ आ खाट पर पसरि गेलहुं। पड़ले-पड़ल खिड़कीसँ बाहरक दृश्य देखऽ लगलहुं। सौभाग्यसँ हमर ओढ़ना एहन छल जाहिपर बरखाक कोनो प्रभाव नहि। एखन बरखा तँ नहि भऽ रहल छल मुदा जाहि तरहक घटाटोप छल, बुझाइत छल जे एकबेर फेर बरखा होयत। सरायक बाहर ठाढ़ ओ खजूरक गाछ जेना रातुक अन्हारसँ डेराकऽ हमर खिड़कीक आओर लग अयबा लेल आतुर छल। नीचाँ सरायक मालिकक कोठली खुजल रहैक। ओहिसँ प्रकाशक एकटा रेखा सड़क पर पसरल रहैक। तखने हम देखलहुँ जे एकटा भुच्चड़ सन ग्रामीण युवक अपन कान्हपर मोटा लदने एकटा जनानीक संग ओहिठाम पहुँचल। ओकरा एकटा फूट कोठलीमे जगह देल जा रहल छैक। युवक आ युवती दुनू पानिसँ बोदरि भेल अछि। जहाँ ओ दुनू बरंडापर पएर रखने रहय कि हवाक ध्वनिसँ पूरा घाटी गूंजि उठल। मेघ जोर-जोरसँ बरिसऽ लागल। बिजलीक चमकमे दूरक पर्वत उड़ैत जकाँ बुझायल। हम खिड़की बन्द कऽ लेलहुँ। जौरसँ घोरल खाट मने उड़नखटोला भऽ जाए चाहैत छल। जेना-जेना हमरा निद्रा आबय लागल, हम परी-लोकमे बौआय लगलहुं। हमरा समक्ष स्मृतिक अन्हार गुफासँ कतेक हेरायल भोतिआयल चेहरा आबय लागल। ओहि चेहरामे बौन आ राक्षसक चेहरा सेहो रहय, जकरा संगे हमरा खूब मोन लगैत रहय। हम ई नहि कहि सकैत छी जे हम कतेक दूर धरि पहुँचल रही। मुदा, जखन हम जगलहुँ तऽ हमरा लागल जेना हम एकटा राजकुमार भऽ गेल छलहुँ, एहन राजकुमार सन जे तिलिस्ममे सूतल राजकुमारीकेँ चोराकऽ जादूक द्वीपसँ घुरि रहल हो।

चारक नीचाँ एक नान्हि टा चिड़ै चहचहा रहल छल। लागल जेना ओ हमरा जगा रहल हो! हम खिड़की फोललहुँ। भोर भऽ गेल रहैक, मुदा अन्हार एखनहु रहबे करैक। बहुत शान्ति रहैक। मूसरधार वर्षा भेल रहैक। हवा सेहो गजब। फलस्वरूप गाछ -बिरिछ उखड़ि गेल रहैक आ ओकर डारि-पात एमहर - ओमहर पानिक नान्हि-नान्हि टा राशिमे छिड़ियायल रहैक। मुदा

ओहि जल-राशि सभमे क्षितिजक लालिमा सेहो झलकि रहल छलैक जाहिसँ सूर्योदयक आभास भऽ रहल छल।

चिड़ै तँ उड़ि गेल मुदा नीचामे जे गरमा-गरम बहस भऽ रहल छलैक ताहिसँ हमर ध्यान ओमहरे चल गेल। हम जङलाक आओर लग चल गेलहुँ। देखलहुँ जे सरायक मालिक ओहि युवकसँ लड़ि रहल अछि, जकरा ओ रातिमे टिकौने रहय। सराय बला साठि पाइ किराया मङैत रहैक आ युवक चालिस पाइसँ अधिक देवक लेल तैयार नहि। हमरा सरायबलापर क्रोध भेल। हमरा नीकजकाँ मोन अछि जे रातिमे जगह देबाक काल चालिस पाइ किराया कहने रहैक।

हम नीचाँ उतरलहुँ। हमरा देखतहि सराय-मालिक चमकि उठल, आ बाजल '' हे देखह, इएह आबि गेलाह एक भलमानुस। हिनका साइकिलो छनि। ई तोरा जकाँ गमार नहि छथि। आब इएह कहताह जे की उचित आ की अनुचित। तोँ आयल रहह दू आदमी आ जा रहल छह तीन आदमी। हमरा परतारिकऽ तेसर आदमीक किराया पचबय चाहैत छह। ''

हमर चिन्ता जल्दीए दूर भऽ गेल। रातिमे जखन चारू दिस बिहाड़ि हड़कम्प मचौने छल, तखन सरायमे एकटा दोसरे घटना घटल। एहि दम्पतिकेँ एकटा पुत्ररत्न जन्म लेने छलैक, आ भोरे सराय मालिक एहि तेसर अप्रत्याशित प्राणिक किराया ठोकि देने रहैक।

हमरा रहितहुँ झगड़ा फरिछा नहि रहल छल। पिताकेँ पुत्र-प्राप्तिक गर्व रहैक। एहि कारणेँ ओ एकटा गाड़ीवानकेँ सेहो रोकि लेने रहय। गाड़ीवान आब चलक लेल अगुता रहल छलैक। हम एहि अवसरकेँ तकितहिँ रही जे कखन एहि झगड़ामे मध्यस्थ भऽ ठाढ़ भेल जाय, कि ता अनायासे ओ दुनू शान्त भऽ गेल। सभक आँखि मुँह निहारए चाहलहुँ। ता देखलहुँ जे भीतरसँ एकटा युवती अपन अमूल्य पोटरीकेँ छातीमे सटौने आबि रहलि अछि। छनभरि ओ तीक्ष्ण दृष्टिएँ दुनू लड़ऽबला दिस तकलक। ओकर मुँह आधा झापल रहैक, मुदा रहैक बड़ सुन्नर।

''चिल्हकोक किराया अहाँ दऽ दिऔक।'' ओ अपन मरदकेँ कहलक। सराय बलाकेँ अन्दाज नहि रहैक जे ई झगड़ा एना फड़िछायत। युवतीक बातपर ओ हीं-हीं करैत दाँत निपोड़ि देलक आ विनम्रतासँ बाजल, ''हँ-हँ , ठीक कहै छथि। चलह, नहि पूरा तँ आधो दऽ दएह। ओना जँ तों ई बात मानि जाह जे चिल्हकाक किराया लेबाक हमर हक जायज अछि तँ हम ताहूसँ संतोष कय लेब।''

''एकरा चिल्हकाक पूरा किराया दऽ दियौक।'' गाड़ी दिस बढ़ैत युवती अपन

पतिकेँ फेर कहलक, '' जनम लितहिँ हमर बेदरा ककरो कर्जदार किएक रहत ? की एकर कोनो प्रतिष्ठा नहि ?''

'' हे लैह !'' युवक सरायबलापर किरायाक पाइ फेकि देलक। सरायबला बिना कोनो उत्साहक ओकरा लपकि लेलक आ बिहाड़ि-पानिक गप हाँकऽ लागल।

ओ दम्पति आ ओ तेसर प्राणी सब गाड़ी लग पहुँचि गेल रहय। पर्वतपर मेघ जुटय लागल छल। ओना भिनसुरका मेघ ओहने होइछ जेहन बकरीक दूसि- गरजत बेसी, बरिसत कम। संस्कृतमे एहने सन कोनो श्लोक हम पढ़ने रही। खैर, चलक लेल आब हमहूँ तैयारे रही। सरायबलाक मुँह कने लजायल - सन भऽ गेल रहैक। ओ दूर चल जाइत गाड़ीकेँ देखि रहल छल।